सितम्बर १९९२ हिंदी पत्रिका में प्रकाशित

धन्य है मैत्री भावना

बड़ा सरल है शान्त रहना, बड़ा सरल है क्रोध-कोपविहीन रहना, बड़ा सरल है मुस्कराते रहना जबकि जीवनधारा एक मधुमय संगीत की भांति सर्वथा मनोनुकूल बह रही हो, जबकि हमारे संसर्ग में आने वाला हर व्यक्ति हमारी मनचाही बोल रहा हो, मनचाहा कर रहा हो, हमारी सारी मनोकामनाएं सहज-सरल रूप से पूरी हो रही हों, चारों ओर बसन्त की हरियाली ही हरियाली हो, कहीं पतझड़ का नाम न हो। परन्तु सच्चा साधक तो वही है जो सर्वथा विपरीत अवस्थाओं में मन की समता बनाए रख सके। जब जीवन में मनचाही जरा भी न हो, जीवन-पथ ऊबड़-खाबड़ ही ऊबड़-खाबड़ हो, चारों ओर कँटीला पतझड़ हो, हरियाली का नामोनिशान न हो, जो मिले वही कटुता का व्यवहार करे, अकारण अपमानित करे, सारी घटनाएं अनचाही ही घटें, मनचाही एक भी न घटे; तो भी अपने मन में लेशमात्र भी द्वेष-द्रोह न जागने पाए, कोप-क्रोधन जागने पाए। अनचाही से निष्प्रभावित हो सौम्यचित्त, करुणा और मैत्री के अगाध जलाशय सदृश सौमनस्यता से लहराता रहे। बाहरी प्रतिकूल परिस्थितियों से किञ्चित भी विचलित न हो। रञ्चमात्र भी दौर्मनस्य न जागे। तो ही सही माने में परिपक्व विपश्यी साधक है। हमें इस अवस्था तक पहुँचने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहना है।

भगवान् ने भिक्षुओं को यही बात समझाते हुए एक उदाहरण प्रस्तुत किया। भूतकाल में श्रावस्ती नगरी में वैदेहिका नाम की एक गृहिणी इस बात के लिए बहुत लोक-प्रसिद्ध थी कि वह अत्यंत शान्त-सौम्य स्वभाव वाली है। उसमें कलह-क्रोधका नामोनिशान नहीं है। कड़वी-कटुबात उसकी जबान पर कभी नहीं आती। एक नौकरानी थी उसके यहां - काली नाम की। बेहद परिश्रमी, सेवाभावी, हँसमुख, विनम्र, विनीत। मालकिन से पहले उठ कर घर का सारा काम-काजबड़ी मुस्तैदी से कुशलतापूर्वक निपटा लेती। मालकिन को शिकवा-शिकायतका कभी मौका ही नहीं मिलता। घर सदा साफ-सुथरा, सजा-सँवरा रहता। मनपसन्द भोजन समय पर तैयार मिलता। घर में कोई मेहमान आ जाय तो उसकी खातिर तवज्जह में कहीं कोई कमी नहीं रहती। सब कुछ मनचाहा, सब कुछ मनभाहा। सुहावना ही सुहावना। यह सब कुछ दासी काली की बदौलत। मालकिन के होठों पर सदा मन्द-मन्द स्मिति, मन्द-मन्द मुस्कान।

मालकिन के सौम्य स्वभाव को काली रोज देखती। बाहर भी इसकी चर्चा सुनती। एक बार उसके मन में आया कि अपनी मालकिन की परीक्षा लेकर देखे। क्या वह निसर्गतः सौम्य स्वभाव वाली है अथवा काली की निर्दोष सेवा के कारण ऐसी है।

दूसरे दिन काली जानबूझ कर देर से उठी और घर का काम-काज समय पर नहीं कर पाई। मालकिन को बहुत बुरा लगा। अगले दिन और देर से उठी तो मालकिन की झल्लाहट बढ़ी। उसने गुस्से में काली पर गालियां बरसी। तीसरे दिन और देर से उठी। अब तो मालकिन से सहा नहीं गया। उसका पारा बहुत तेज हो गया। बात गाली-गलौज पर ही नहीं रुकी। वह क्रोधित हुई और पास पड़ी हुई कड़छी काली के सिर पर दे मारी। सिर से खून की धारा बह चली। मालकिन के सौम्य स्वभाव की पोल खुल गई। अनचाही के प्रति क्रोध करने का दूषित स्वभाव मानस की जड़ों तक बड़ा सबल होता है, दृढ़मूल होता है। परन्तु मनचाही होती रहे तो ऊपर-ऊपर की प्रसन्नता उसे ढांपे रखती है। स्वभाव तो भीतर का बदलना है। सीखना यह है कि अनचाही में हम अकुपित और शान्त-सुमन कैसे रह सकें।

उन्हीं दिनों एक भिक्षु का भिक्षुणी-संघ के प्रति जरूरत से ज्यादा लगाव हो गया था। भिक्षुणियों के खिलाफ कोई एक शब्द भी बोले तो वह चिड़चिड़ा उठता था। उसे ही लक्षकर भगवान् ने उस समय सच्ची और गहरी सहिष्णुता भरी मैत्री का सारगर्भित उपदेश दिया। भगवान् ने समझाया - "भिक्षुओं, कोई व्यक्ति तुमसे समयानुकूल बोले या प्रतिकूल, सच बोले या झूठ, स्नेह-स्निग्ध मृदुल वाणी बोले या कर्कश-कटुसार्थक बोले या निरर्थक, मैत्रीपूर्ण चित्त से बोले या द्रोहपूर्ण चित्त से, तुम्हें तो हर अवस्था में अपने चित्त को विकार-विमुक्त रखना चाहिए। तुम्हारें मुँह से भूल कर भी कोई दुर्वचन न निकले। चित्त सदा मैत्रीभाव से आप्लावित रहे। जरा भी द्वेष-दुर्भाव न जागे, बल्कि उसी व्यक्ति को आलम्बन बनाकर अपनी मंगल-मैत्री को अपरिमित बनाने का अभ्यास आरम्भ कर दें। इस प्रकार उसे अपने कल्याण का कारण बना लें।

उन गृहत्यागी, निर्वाणोन्मुख भिक्षुओं को भगवान् ने उपमाओं से समझाया -

१. कोई नासमझ व्यक्ति हाथ में कुदाल-फावड़ालेकर आये और कहे कि मैं इस महापृथ्वी को खोद-खोद कर समाप्त कर दूंगा।

२. कोई नासमझ व्यक्ति लाख, हल्दी या मजीठ का रंग घोलकर लाए और कहे कि मैं इस सारे आकाश को इस रंग से रँग दूंगा।

३. कोई नासमझ व्यक्ति घास-फूस इकट्ठा कर आग जलाये और कहे कि इससे मैं गंगा के सारे जल को तपा दूंगा।

४. कोई नासमझ व्यक्ति सुकोमल, मुलायम बालों वाली बिल्ली के शरीर को किसी खुरदरी लकड़ी से रगड़े और कहे कि मैं इन बालों को खुरदरा बना दूंगा।

तो यह सब के सब असफल ही होंगे। इसी प्रकार कोई तुम्हारी समता भंग करना चाहे, तुम्हें क्रुद्ध करना चाहे तो भले हजार प्रयत्न करे, पर यदि तुम्हारी मैत्री सबल होगी तो वह असफल ही होगा।

पृथ्वी महान् है। किसी की कुदाल से खोदी जाने पर नष्ट होने वाली नहीं। आकाश अनन्त है। किसी के रंगों से रँगा जा सकने वाला नहीं। गंगा विशाल है। किसी घास-फूस की आग से तपाई जा सकने वाली नहीं। बिल्ली के रोएं स्वभाव से कोमल हैं। किसी खुरदरी लकड़ी से रगड़े जाने पर खुरदरे बन जाने वाले नहीं।

इसी प्रकार किसी भिक्षु की मैत्री अनन्त-अपरिमित हो और यह उसका स्वभाव बन जाय तो किसी व्यक्ति के सीमित प्रयत्नों द्वारा नष्ट हो जाने वाली नहीं। अतः भिक्षुओं को अपना मैत्री बल अपरिमित कर लेना चाहिए। यहां तक कि यदि दो दुष्ट दुर्जन दो मूठ वाले किसी आरे को पकड़कर भिक्षु के शरीर का कोई अंग भी काटें तो उनके प्रति द्वेष न जगने पाये। मैत्री ही जागे। तो ही भगवान् की शिक्षा के पालन की सफलता है। अतः अपना मैत्री-बल अपरिमित करें!

*****

अनेक भिक्षु ऐसे होते थे जो भगवान् के आदेश को शिरोधार्य कर गम्भीरतापूर्वक उसका पालन करने लगते थे। उदाहरणस्वरूप एक बार भगवान् ने कहा कि वह एकासन भोजनसेवी हैं याने चौबीस घंटे में केवल एक ही बार भोजन करते हैं। इससे उनका स्वास्थ्य ठीक रहता है। वह निरोगी रहते हैं। उनकी स्फूर्ति और बल बढ़ता है और शारीरिक सुख भी। इसे सुन कर अनेक भिक्षु एकासन भोजनसेवी बने। यद्यपि भिक्षु-विनय के नियमों के अनुसार केवल विकालभोजन याने मध्याह्नोपरान्त के भोजन से विरत रहना ही पर्याप्त था।

इसी प्रकार इस सबल मैत्री भावना के विकास में अनेक भिक्षु लग गये। एक उज्ज्वल उदाहरण-

सूनापरान्त के सुप्पारक पत्तन बंदरगाह का निवासी, 'पूर्ण' नामक व्यापारी व्यवसाय हेतु श्रावस्ती गया। वहां भगवान् के सम्पर्क में आया तो धर्म के सम्पर्क में आया। बहुत वैराग्य जागा और वहीं प्रवर्जित हो भिक्षु संघ में सम्मिलित हो गया। वह भगवान् के उपदेशों का दृढ़तापूर्वक पालन करने वाला था। कुछ समय पश्चात् स्वदेश लौटने का मन हुआ तो भगवान् से आज्ञा लेने गया।

भगवान् ने पूछा- "सूनापरान्त जनपद के लोग बड़े कठोर हैं। चण्ड स्वभाव वाले हैं। वे तुझ पर आक्रोश करेंगे। तुझे कटु वचन बोलेंगे। तो तुझे कैसा लगेगा, पूर्ण?"

"मुझे अच्छा ही लगेगा, भगवान्! मेरे मन में यही भाव जागेगा कि सूनापरान्त के लोग बड़े भद्र हैं, सुभद्र हैं। बहुत भले हैं। मुझ पर नाराज होने पर केवल चन्द कटु वचन कहकर आक्रोश प्रकट करते हैं, मुझे हाथ से तो नहीं मारते।"

-"यदि वह तुझे हाथ से मारें, तो कैसा लगेगा, पूर्ण?"

-"अच्छा ही लगेगा, भगवान्! मेरे मन में यही भाव जागेगा कि यह कितने भद्र हैं, सुभद्र हैं। कितने भले हैं। केवल हाथों से मार कर रह गये। ढेलों से तो नहीं मारा।"

-"और यदि वह ढेलों से मारें, तो कैसा लगेगा, पूर्ण?"

-"अच्छा ही लगेगा, भगवान्! मेरे मन में यही भाव जागेगा कि कितने भले हैं, यह कितने भद्र हैं, सुभद्र हैं यह लोग। केवल ढेले से मार कर रह गये। डण्डे से तो नहीं मारते मुझे। सचमुच भले हैं।"

-"और यदि डण्डे से मारें, तो कैसा लगेगा, पूर्ण?"

-"अच्छा ही लगेगा, भगवान्! मेरे मन में यही भाव जागेगा कि कितने भद्र हैं, सुभद्र हैं, कितने भले हैं यहां के लोग। केवल डण्डे से मार कर रह गये। शस्त्र से नहीं मारते मुझे। सचमुच बड़े भले हैं।"

-"और यदि शस्त्र से मारें, तो कैसा लगेगा, पूर्ण?"

-"अच्छा ही लगेगा, भगवान्! मन में यही भाव जागेगा कि कितने भद्र हैं, सुभद्र हैं यहां के लोग। कितने भले हैं। सामान्य शस्त्र से मार कर घायल ही तो किया। किसी तेज शस्त्र से मार कर मेरे प्राण तो नहीं हर लिये।"

-"और यदि वह तुझे तेज शस्त्र से मार डालें, तो कैसा लगेगा, पूर्ण?"

-"अच्छा ही लगेगा, भगवान्! कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो दुःखमय जिन्दगी से ऊब कर मरने के लिए किसी शस्त्रधारी प्राणघातक को ढूंढते हैं। सो मुझे यह शस्त्रधारी प्राणघातक बिना ढूंढे ही मिल गये। कितने भले हैं यहां के लोग।"

"साधु! साधु! साधु!" भगवान् ने साधुकार देकर कहा-"पूर्ण! तू ऐसे धर्ममय चित्त से अपनी मातृभूमि में सफलतापूर्वक निवास कर सकता है और धर्म-सेवा कर सकता है।"

यों भगवान् का आशीर्वाद् लेकर भिक्षु पूर्ण स्वदेश लौटा और आते हुए भगवान् से जो साधना विधि सीखी थी उसका अभ्यास करते हुए पहले ही वर्षावास में उसने अरहन्त अवस्था प्राप्त कर ली। पहले ही वर्षावास में उस प्रदेश के एक हजार नर-नारियों को शुद्ध धर्म में प्रतिष्ठापित कर दिया। तदनन्तर उनकी संख्या दिनोंदिन बढ़ती गई। अनेक लोगों को धर्म-लाभ मिला।

भगवान् के प्रशिक्षण के अनुकूल सधे हुए असीम मैत्री-बल से भिक्षु पूर्ण ने उस प्रदेश में जो शुद्ध धर्म का बीज वपन किया, वह कालान्तर में खूब फला।

आज के महाराष्ट्र का समस्त उत्तरी तथा पूर्वी प्रदेश अरहन्त पूर्ण की धर्म सेवा के कारण शुद्ध धर्म की पावन गंगा से लहलहा उठा। मैत्री बल से कठोर स्वभावी लोग मृदु स्वभावी हो गये। इस प्रदेश में स्थान स्थान पर कठोर चट्टानों में कटी हुई ध्यान गुफाएं मैत्री-प्रबल अरहन्त पूर्ण और उसके योग्य शिष्यों-प्रशिष्यों की अपूर्व सफलता की आज भी मधुर याद दिलाती है; वहां की पावन लहरियां उनकी गौरव गाथाएं गाती हैं।

धन्य है मंगलमयी मैत्रीभावना! धन्य है मैत्रीभावना से परिपूर्ण पूर्ण!!

मंगल मित्र

स.ना.गो.